हमराही

वर्ष 4 अंक 1 व 2 जन०-अप्रै० 1992

बड़े बाँध किसके लिए

भारत में बड़े बाँधों के अनुभव सार्थकता से काफी दूर जा चुके हैं जबकि इन्हें ही कभी "आधुनिक भारत के मंदिर" कहा गया था। यद्यपि आज भी इन परियोजनाओं को विकास का जादू कह कर बढ़ावा दिया जाता है जबकि इनके बाँध के निर्माण कारण पर्यावरण विनाश, सामाजिक विघटन आर्थिक अक्षमता, खराब परिणाम तथा लाभों के असमान वितरण की महामारी जग जाहिर है।

पर्यावरण संघातों के साथ बाँध से पहले (1) भूमि क्षरण (2) सूक्ष्म जलवायु परिवर्तन (3) जंगल, वानस्पतिक एवं जीव जंतुओंका विनाश, (4) वानस्पतिक एवं जीवजन्तुओं की संख्या एवं पलायन में परिवर्तन, (5) मत्स्य पालन में बदलाव विशेष रूप से दलदली भूमि में, (6) क्षेत्र में निर्माण के कारण व विस्थापन से अनगिनत दुष्प्रभाव, (7) भूमि स्खलन, गाद भरना, तलछट अवसाद, (8) पानी की झील में रोग वाहकों के पैदा होने से उनसे जुड़ी बीमारियों में बढ़ावा, (9) भूकंपन, (10) जंगली भूमि का नुकसान, (11) झील के आस-पास पानी का उभरना तथा, (12) लोगों का अपनी जमीन से उखड़ना शामिल है।

बाँध के बाद के क्षेत्र (सिंचित क्षेत्र सहित) (1) पानी उभरना व दलदल, (2) नदी में पानी बहाव की कमी तथा निक्षेप आदि जलचर परिस्थितकी, वनस्पति तथा जीव-जन्तुओं के संदर्भ में, (3) सूक्ष्म जलवायु परिवर्तन, (4) बाढ़ का आना, (5) नदी के मुहाने पर नमकीन पानी के प्रवेश का बढ़ना, (6) तटीय परिस्थितकी में परिवर्तन (उदाहरण-आमराई घटना), (7) नदी के साथ लगी उर्वरा जमीन को नुकसान तथा (8) रोग वाहकों की पैदाइश तथा उनसे जुड़े रोगों को बढ़ावा मिलता है।

सामाजिक विघटन - डूब में आने वाले क्षेत्र के लोगों के विस्थापन के कारण, यहाँ तक कि बहुत जल्दबाजी के कारण विस्थापित होते हैं। करोड़ों (जिसके सही आँकड़े तो नहीं हैं) लोगों, जिनमें से गरीब एवं दलितों की संख्या बहुतायत में होती है, को अपनी जगह से उखाड़कर आगे की दरिद्रता में धकेल दिया जाता है। आज बहुतायत संख्या में नौकर, भिखारी, सफाई कर्मी तथा अन्य लोग इसी 'विकास शरणार्थी' वर्ग से होते हैं। केवल हाल ही में पुर्नवास नीतियों में वृहद सुधार हुये हैं लेकिन बहुत ज्यादा संख्या में बेदखल लोग अब भी इस सुधार क्षेत्र के बाहर ही हैं।

और यह सब किसके मूल्य पर ? क्या फायदे इसे न्यायोचित करार दे सकते हैं। इसके बाद भी दुखद यह है कि सरकार ने अब तक बड़े बाँध के व्यापक मूल्यांकन हेतु कुछ भी नहीं किया। अब तक के जो भी प्रमाण उपलब्ध हैं उनसे इनका प्रदर्शन काफी खराब ही हैं कि यह बाँध आर्थिक रूप से बहुत ही सोचनीय हैं।

इस तरह यह नहीं कहा जा सकता कि इनसे कोई भी लाभ नहीं है। निश्चित रूप से भारत के विकास में सिंचाई एवं विद्युत उत्पादन की मुख्य भूमिका है। लेकिन यह लाभ भी इस बात को प्रकट करते हैं कि ज्यादातर बड़े किसान, उद्योगपति तथा शहरी लोगों को फायदा है जबकि गरीब उखाड़े फेंके गए। बाँधों ने हमारे समाज में प्रायः असमानता को ही बढ़ावा दिया है।

इन सभी आलोचनाओं को मद्देनजर रखते हुए, पहले के बने एवं प्रस्तावित बाँधों के पुर्नमूल्यांकन की जरूरत है ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक, आर्थिक एवं समानता के दृष्टिकोण की समीक्षा हो सके। इस बात के संकेत भी स्पष्ट हैं कि अब समय आ गया है जब विकेंद्रीकरण के साथ, छोटे पैमाने के विकल्पों को अपनाया जाए-जिसमें जल प्रबंध, सूखी खेती, छिड़काव की सिंचाई, वर्षा के पानी वाली खेती तथा अन्य बहुत से परम्परागत साधन भी शामिल हैं। या फिर वे नए साधन जो अभी हाल में विकसित हुए हैं और अब अधिकांश समुदायों द्वारा भारत में प्रयोग में लाये जा रहे हैं।

आशीष कोठारी